[F)

छत्तीसगढ़ की मृतक–स्मृति–स्तम्भों की कार्य–प्रणाली एवं चित्रकार

डॉ0 महेश चन्द राय प्रजापति
एसो0 प्रोफे0, ग्राफिक्स विभाग,
गर्व0 कालिज ऑफ आर्ट, चंडीगढ़
Email: maheshprajapati_7@yahoo.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 महेश चन्द राय प्रजापति,

छत्तीसगढ़ की मृतक–स्मृति–स्तम्भों की कार्य–प्रणाली एवं चित्रकार

Artistic Narration 2019, Vol. X, No. 2, pp.131-138

https://anubooks.com/?page_id=6393

सारांश

मृतक–स्मृति–स्तंभ का प्रचलन आज के समाज की देन नहीं है, बल्कि यह प्राचीन सभ्यता से ही चली आ रही है। मानव सदा ही आत्मा के पुनः जन्म के लिए प्रार्थना करता है उसे अजर–अमर मानता है। इसलिए उस आत्मा की शांति के लिए भरसक प्रयास करता रहा है। स्तंभों पर बनाये जाने वाले विषय प्रतीक के रुप में भी अलंकृत किये जाते हैं। जिसका प्रतिकात्मक अध्ययन करना बेहद आवश्यक होगा।

मुख्य शब्द *– इंदिरा कला–संगीत विश्वविद्यालय ग्रंथालय , मानव संग्रहालय भोपाल, भारत भवन मध्यप्रदेश मृतक–स्मृति–स्तंभ, आदिवासी, गणचिन्ह, भील आदिवासीगोंड, आदिवासी कोरकू, आदिवासी कलाकार।*

प्रस्तावना

मृतक–स्मृति–स्तंभ का प्रचलन आज के समाज की देन नहीं है, बल्कि यह प्राचीन सभ्यता से ही चली आ रही है। मानव सदा ही आत्मा के पुनः जन्म के लिए प्रार्थना करता है उसे अजर–अमर मानता है। इसलिए उस आत्मा की शांति के लिए भरसक प्रयास करता रहा है। स्तंभों पर बनाये जाने वाले विषय प्रतीक के रुप में भी अलंकृत किये जाते हैं। जिसका प्रतिकात्मक अध्ययन करना बेहद आवश्यक होगा। देवी–देवता एवं गोत्र के चित्रण का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कभी–कभी देवी–देवताओं के रुप में प्रकषति में मौजूद फल–फूल, पेड़–पौधे, नदी–पहाड़, जंगल आदि को मान्य देवी–देवताओं का दर्जा देकर उसकी पूजा–आराधना करना आदिवासी समाज की परम्परा रही है। स्तंभों पर भी इसी प्रकार के प्रतीकात्मक रुप को दिखाने का बराबर प्रयास कलाकारों द्वारा किया जाता है। जिसमें प्रमुख रुप से दैनिक जीवन के दृश्य, शिकार के दृश्य, नृत्य के दृश्य, वाद्य यंत्र, पशु–पक्षी, औजार, अलंकरण आदि को दर्शाया गया है।

मृतक स्तम्भ को बीत, उरुसकाल खम्ब और मट्ठ के नाम से भी जाना जाता है। मृत व्यक्ति की स्मृति को चिरकाल तक जीवित रखने के लिए इनके निर्माण किए जाते हैं। बीत और उरुसकाल में कलागत वैभव नहीं होता, किन्तु इन्हें देखने से भव्यता और श्रेष्ठता का बोध अवश्य होता है। मृत व्यक्ति की याद में इसे परिवारजनों द्वारा बनाया जाता है। उरुसकाल एक फीट से लेकर पन्द्रह–बीस फीट और कभी–कभी इससे भी लम्बा शिलाखण्ड होता है। इसे भी मृतक की स्मृति में जमीन में गाढ कर खड़ा किया जाता है। यह मृतक के गौरव गाथा और उसके सम्मान का प्रतीक होता है। लकड़ी या पत्थर के तराशे हुए सुडौल और विभिन्न आकृतियों से सुसंगत स्तम्भ को 'खम्ब' कहा जाता है। इसके अलावा सीमेंट से मन्दिर या मट्ठनुमा आकृति जब मृतक की याद में बनायी जाती है तो उसे 'मट्ठ' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।**(चित्र 1)**

माड़िया के खम्ब और मट्ठ नामक स्मृति चिन्ह कलागत गरिमा से सम्पन्न होते हैं। इन पर विभिन्न प्रकार के रूपकारों, रंगों और आकृतियों का कुशल संयोजन होता है। खम्ब लकड़ी, पत्थर और सीमेंट से तैयार किया जाता है।लकड़ी के बने स्तम्भ दुर्लभ एवं जर्जर अवस्था में देखने को मिलते हैं क्योंकि लकड़ी के बने स्तम्भों पर बनाये गये चित्र चूंकि लकड़ी को खोदकर ही बनाये जाते है।**(चित्र 2)**

[F)

(चित्र 1) (चित्र 2)

यही कारण है कि इन आदिवासियों में लकड़ी के स्तम्भों का प्रचलन कम होता जा रहा है। सागौन, सरई एवं महुआ की लकड़ियों में मौसम का प्रभाव अत्यन्त धीरे–धीरे एवं अधिक समय के बाद ही हो पाता है। लेकिन आज जो जर्जर अवस्था में दुर्लभ लकड़ी के स्तम्भ गड़े हैं उनका विश्लेषण अगर हम करें तो पाते हैं कि इन स्तम्भों की लकड़ी पेड़ की सीधी टहनी को आयताकार रूप में काटा जाता है। फिर उसे साफ कर उस पर कारीगर या कलाकार चाक मिट्टी या कोयले के माध्यम से रेखा खींचता है।

लकड़ी के स्तम्भों का निर्माण प्रायः गांव के चित्रकार या कारीगर ही करते हैं। बसूला, छेनी, हथौड़ी आदि के माध्यम से ये धीरे–धीरे आकषतियों का निर्माण करते हैं। ज्यादातर एक स्तम्भ को एक ही कलाकार या कारीगर बनता है। अपने पूर्वजों की परम्परा को कायम रखते हुए ये कारीगर या चित्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी इसे अपना व्यवसाय बनाकर इन स्तम्भों को आकार देते हैं। पत्थर या लकड़ी के स्तम्भ को कलाकार पूरा करने के बाद यथास्थान पर ले जाने देता है। इसे गाड़ने के लिए स्तम्भ का कुछ हिस्सा जमीन के अन्दर गाड़ देते हैं। कभी–कभी लकड़ी पर आकृति उकेरने के बाद उस पर काला तैल रंग या अन्य तरह का पेंट लगा देता है, जिससे कि पानी का प्रभाव न पड़े। **(चित्र 3)**

इसी प्रकार की एक अन्य विधि में सीमेंट एवं रेत के द्वारा कलाकार आकृति को उभार कर बनाता है परन्तु उस प्रकार की रचना में बारीकियों की कमी होती है। परन्तु इस प्रकार की रचना में चित्र के रंगों का या उसके नष्ट होने का डर नहीं होता, मौसम के प्रभाव से यह धुंधला जरुर हो जाता है। **(चित्र 4)**

(चित्र 3)

(चित्र 4)

लकड़ी के अभाव के कारण अब अधिकांशकारीगर एवं चित्रकार पत्थरों के ऊपर ही अपनी अभिव्यक्ति को प्रकट करने लगे हैं। अब अधिकांश चित्रकारी पत्थरों पर ही देखने को मिलती है। कलाकारों ने जब अपनी इस कला को लकड़ी के स्तम्भों पर क्षीण होता पाया तो उन्होंने अपनी कला के स्वरूप को बचाये रखने के लिए पत्थरों पर इस कला को चित्रित करना शुरू कर दिया। **(चित्र 5)**

सर्वप्रथम पत्थरों पर उकेर कर आकृति–निर्माण का प्रयास भी किया लेकिन पत्थरों पर उकेरने में इन्हें अधिक तकलीफों का सामना करना पड़ता था। पत्थरों पर रंगों के माध्यम से कलाकृति का निर्माण करना इन्हें अधिक सरल लगा। इन्होंने रंग के लिए पेड़ के पत्ते, फूल या तने का सहारा लेकर चित्रकारी शुरू कर दी। इसके अलावा इन्होंने काली मिट्टी एवं कोपले का भी उपयोग किया, लेकिन पाया कि रंगों का यह माध्यम मौसम से प्रभावित हो जाता है। उसके बाद इन्होंने ऐनेमल पेंट को अपनाया एवं उसे आज तक निरन्तर व्यवहार कर रहे हैं। यह माध्यम सबसे सरल एवं टिकाऊ भी लगा। पत्थर के अलावा लकड़ियों एवं सीमेंट के उपर भी इसका उपयोग किया जाता है। **(चित्र 6)** कहीं–कहीं पर सिर्फ बड़े आकार के पत्थर को गाड़ दिया जाता है, उस पर चित्रकारी नहीं होती है, जानकारी से यह पता चला कि जो लोग आर्थिक रूप से सक्षम नहीं होते वे सिर्फ पत्थर रखकर भी मृतक–स्मृति– स्तम्भों की इस परम्परा का निर्वाह करते हैं।

[F)

(चित्र 5)

(चित्र 6)

मृतक स्मृति स्तम्भों के चित्रण करने के लिए चित्रकार को किसी शिक्षा या अध्ययन की आवश्यकता नहीं होती। यह एक परम्परागत शैली है जो एक कलाकार दूसरे कलाकार को सिखाता है। कभी पिता, पुत्र को यह तकनीक सिखाता है, कभी अपनी रुचि से नवयुवक प्रेरित होकर चित्रण शुरु कर देते हैं। कुछ कलाकार आज ख्याति प्राप्त हैं जिन्होंने इस कला को अपना उद्देश्य बनाया एवं कार्य करते हैं।

इस कला को किसी संगठन या सरकारी तन्त्र का संरक्षण प्राप्त नहीं है ऐसे में कलाकार को मृतक परिवार पर ही आश्रित रहना पड़ता है। कम पैसों में इस कला का निर्माण करना कलाकार की मजबूरी होती है। विशेष बात यह भी है कि इस कला को चित्रकार अपनी अभिव्यक्ति सिर्फ इन्हीं खम्भों पर दिखा पाते हैं। ये स्तम्भ बेचे या खरीदे नहीं जाते इसलिए एक खास मौके पर बनाये जाने वाली इस कला का चित्रण विरल होता है। जिस प्रकार दिवारों पर या कागजों पर चित्रण कर चित्रकार अपनी कला को बेच कर अच्छे पैसे कमा लेता है वैसे ये कलाकार नहीं कर पाते हैं। "[2]

लकड़ी का प्रचलन लगभग नहीं के बराबर हो जाने से इस विद्या के कलाकार भी कम हो गये हैं। लकड़ी के उत्कृष्ट उदाहरण जीर्ण–शीर्ण अवस्था में आज भी देखे जाते हैं। कलाकारों की कुशलता का ऐसा नमूना अब देखने को नहीं मिलता है। बस्तर में मुरिया छोटे स्तम्भ बनाते हैं, ऐसे क्षेत्र में जहां पाषाण–संस्कृति नष्ट हो चुकी है। इन्द्रावती की वादियों के कुरुकू छोटे स्तम्भों का निर्माण करते हैं। जिनमें ऊपरी हिस्से में पंछी की आकृति बनी होती है, लेकिन इस परम्परा का विस्तृत रूप बाईसन हार्न माड़िया जनजाति में देखा जाता है। ये सिर्फ स्तम्भों का निर्माण ही नहीं करते बल्कि उनको निर्देश देकर भी बनवाते हैं। ये स्तम्भ पूरी तरह से माड़िया रुचि और अभिव्यक्ति को दर्शाता है। बनाने वाले भी पूरी तरह से अभ्यस्त हैं, भले ही नाम अलग हो।

[1]. भेटवार्ता, डॉ सरकार, क्षेत्रीय मानव विज्ञान संग्रहालय, जगदलपुर

माड़िया के स्तम्भ पत्थर 'मन्हीर' की जगह नहीं बनाये जाते, बल्कि उनके साथ ही खड़े किये जाते हैं। कोई भी महत्वपूर्ण व्यक्ति के लिए पत्थर उस व्यक्ति की आत्मा को अगले जन्म की प्राप्ति के लिए अर्पण किया जाता है, एवं इस संसार में इज्जत, मान, सम्मान एवं गौरव का प्रतीक रूप दर्शाता है।

ये स्तम्भ ज्यादातर मुख्यमार्ग के पास बनाये जाते हैं ताकि आने–जाने वाले लोग इन्हें देख सकें। ये स्तम्भ सागौन की लकड़ी के बने होते हैं, जो गोंड लोगों का पवित्र है।"[1]

ग्राम बड़े किलेपाल, वेट्टीपारा, जगदलपुर क्षेत्र का 40 वर्षीय कलाकार जगरा पोयामी मिला, माड़िया जाति का यह कलाकार अपनी कलाकृति के लिए दूर–दूर तक जाना जाता है। लोगों ने उसका पता हमें आसानी से बता दिया। उसके साथ हुई भेंटवार्ता के कुछ अंश यहां प्रस्तुत कर रहा हूँ।

प्रश्न : आप इस तरह के स्तम्भ कब से बना रहे हैं?

कलाकार : बचपन से मेरे पिताजी भी इसी प्रकार की चित्रकारी करते थे और फिर मैंने भी उनके साथ रहकर सीख लिया है।

प्रश्न : अब तक आपने कितने स्तम्भ बनाये हैं?

कलाकार : मैंने लगभग 100 से अधिक स्तम्भ बनाये हैं।

प्रश्न : क्या चित्र बनाने का सामान आपका अपना होता है?

कलाकार : नहीं, यह मष्तक के परिवार या रिश्तेदार देते हैं।

प्रश्न : क्या स्तम्भ पर बनने वाले चित्रों के विषय आप खुद से निर्धारित करते हैं?

कलाकार : मृतक के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं को हम मृतक के परिवार या रिश्तेदार के कहने या निर्देशानुसार चित्रित करते हैं, परन्तु बाकी का चित्रण हम कलाकार स्वयं की मर्जी से तैयार करते हैं।

प्रश्न : आप चित्रों को किस प्रकार संयोजित करते हैं?

कलाकार : मैं चित्रों के विषय को अधिक से अधिक चित्रित करने का प्रयास करता हूं और उसके लिए चित्रों का विभाजन खण्ड–खण्ड में करता हूँ।

प्रश्न : यह स्तंभ किसके कहने पर बनाया जाता है?

कलाकार : मृतक मरने से पहले अपने बेटे या रिश्तेदार को बता जाता है। कभी–कभी गांव के लोगों के कहने पर भी यह स्तम्भ बनाया जाता है।

प्रश्न : पहले लकड़ी का उपयोग किया जाता था, लेकिन अब पत्थर का उपयोग क्यों किया जाता है?

कलाकार : अब लकड़ी का अभाव है एवं लकड़ी बहुत मंहगी भी होती है। पत्थर आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। इसलिए अब पत्थर का ही उपयोग होता है। वैसे भी लकड़ी का स्तम्भ गांव के प्रमुख व्यक्ति के लिए ही बनाया जाता है।

प्रश्न : आपके चित्रों के विषय क्या–क्या होते हैं?

कलाकार : हम अपने देवी–देवता, गोत्र विषयक, जानवर, पक्षी, फल–फूल, नाच–गानों के दृश्य, तीज–त्यौहार, घटना एवं मृतक के जीवन से जुड़ी यादों को चित्र का विषय बनाते हैं।

प्रश्न : आप किस तरह के रंगों का उपयोग करते हैं?

कालाकार : पहले तो हम फूल–पत्तियों एवं पत्थरों से रंग बनाकर लगाते थे पर बरसात एवं मौसम

[F)

के कारण ये रंग मिट जाते थे। इसलिए हमने बाजार में मिलने वाले एनीमल पेंट का उपयोग शुरु कर दिया है। ये पेंट अधिक टिकाऊ एवं चमकदार होते हैं।

प्रश्न : ब्रश या तूलिका किस प्रकार की होती है?

कलाकार : ज्यादातर ब्रश तो बाजार से ही खरीदकर उपयोग करते हैं या फिर महुआ की टहनी का भी ब्रश बना लेते हैं।

प्रश्न : ये मृतक स्तम्भ मरने के कितने दिन बाद बनाया जाता है?

कलाकार : मरने के लगभग 5 या 8 दिन के अन्दर इसे बनाया जा सकता है। मरने वाले का क्रियाकर्म करने के बाद इसे बनाना शुरु कर देते हैं।

प्रश्न : क्या यह सब मृतक परिवार स्वयं करता है?

कलाकार : कभी–कभी गांव वाले उस परिवार का सहयोग करते हैं, अपनी इच्छा से मृतक के घर स्वयं जाकर सामान देते हैं जिसकी उस जरुरत होती है। ताकि मृतक परिवार अपने सगे–सम्बन्धियों को यह सब दान कर सके, लेकिन दान–पुण्य मृतक को अर्पण किया माना जाता है।

प्रश्न : आप इन स्तम्भों को क्या कह कर पुकारते हैं?

कलाकार : हम इसे मठ कह कर पुकारते हैं।

प्रश्न : यह स्तम्भ क्या किसी खास जगह गड़ाया जाता है?

कलाकार : मृतक को जहां जलाते या गाड़ते हैं, स्तम्भ वहां नहीं गड़ाया जाता बल्कि अन्य जगह पर गड़ाया जाता है। ज्यादातर वैसी जगह पर गड़ाते हैं जहां पर हर किसी की नजर पड़ती हो। कभी–कभी मृतक की पूर्व इच्छानुसार उसे उसके खेत या जमीन के आसपास यह स्तम्भ गाड़ते हैं। कुछ लोग उपनी बाड़ी में इसे गाड़ते हैं।

प्रश्न : क्या पूरा स्तम्भ आप ही बनाते हैं?

कलाकार : नहीं, स्तम्भ का ऊपरी हिस्सा, जो मुकुट या चिड़िया की आकृति का होता है, इसे गांव के बढई या लोहार बनाते हैं।"[2]

जगरा पोयामी के अलावा जगदलपुर क्षेत्र में अन्य कई चित्रकार इन स्तम्भों को चित्रित करते हैं। जिनमें गीदम क्षेत्र का कलाकार शेख निजामुद्दीन, ग्राम समलुर का कलाकार समलु, पटेल पारा बाघमुण्डी का समारु राम, डोगरी गुडा, मारंगा के पास का रहने वाला चित्रकार छितरु राम, जैसे अनेक कलाकार इस परम्परा का पालन कर रहे हैं।

बस्तर के माड़िया के अलावा इस प्रकार के स्तम्भ भील भी बनाते हैं। भीलों के स्तम्भ बनाने वाले कुछ प्रसिद्ध कलाकार आनन्द राव चौधरी, लक्ष्मण भाई सरगाडे, नाथूभाई सरगाडे, कन्दनलाल भेन्था, मदन सिंह सरगाडे, मोहन मांगीलाला। कोरकू आदिवासियों के बनाये जाने वाले स्तम्भ मे बाजीराम जो बैतूल का रहने वाला है, ग्राम सकनापल्ली के माड़वी अंदों और बुदरु जैसे कलाकार मृतक–स्तम्भों के कुशल कारीगरी के लिए जाने जाते हैं। दण्डामी माड़िया की जातिगत पहचान, उनकी स्मृतियों, मिथक कथाओं, परम्परा और परिवेश से सम्बन्धित चित्रों की रचना करने में ये सक्षम कलाकार हैं। इनके द्वारा

(SJI

बनाये गये चित्रों में माड़िया स्तम्भों के प्रिय रंगों और आकृतियों के अलावा सघन भाव–बोध के भी दर्शन होते हैं। इनके चित्र की रचना रैखिक आकृतियों और गहरे रंगों की अर्न्तक्रिया के फलस्वरूप होती है। उनमें परम्परागत आदिम भाव–बोध और सहज़ता के र्दशन होते हैं।"[3]

संदर्भ ग्रंथ

1 दण्डामी माड़िया, नवल शुक्ल,

2 भेटवार्ता, जगरा पोयामी, ग्राम–बड़े किलेपाल, जगदलपुर

3 Verrier Elwin. The Tribal Art of Middle India,

4 भेटवार्ता, डॉ सरकार, क्षेत्रीय मानव विज्ञान संग्रहालय, जगदलपुर